# पूज्य उपाध्यायश्री का प्रवचन

ता. 1 सितम्बर 2013, पालीताना

जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ के उपाध्याय प्रवर पूज्य गुरूदेव मरूधर मणि श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने बाबुलाल लूणिया एवं रायचंद दायमा परिवार की ओर से आयोजित चातुर्मास पर्व के अन्तर्गत श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में आज संघमाला के अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए कहा– मनुष्य जिन्दगी भर सुरक्षा खोजता है। मगर वह कभी भी सुरक्षित नहीं हो पाता... नहीं रह पाता। सुरक्षा की खोज भय से जन्मी प्रतिक्रिया है। जीवन का दूसरा नाम ही भयपूर्ण अवस्था है। भय की कोई पूर्वसूचना नहीं है। भय का कोई एक प्रकार भी नहीं है। भय चारों नहीं बल्कि दशों दिशाओं से आता है। वह सुरक्षा के लिये पुरूषार्थ करता है। धूप से सुरक्षा चाहता है, छांव खोजता है। सर्दी से सुरक्षा चाहता है, कम्बल ओढ लेता है।

उन्होंने कहा– बरसात से बचने के लिये मकान का निर्माण कर देता है। अन्दर से पूर्ण गरीब है... वह अपनी गरीबी अच्छी तरह जानता है। पर अमीरी का अहसास करने के लिये मकान पर... संपत्ति और जायदाद पर अपना नाम अंकित कर देता है। ऐसा करके वह अपने मन को अपने अमीर होने की झूठी तसल्ली देता है।

उन्होंने कहा– बीमारी से बचने के लिये दवाई की खोज करता है। वृद्धावस्था से सुरक्षा चाहता है, संग्रह करना प्रारंभ करता है। वह अच्छी तरह जानता है कि प्राप्त हो रहे सम्मान का कोई मूल्य नहीं है, फिर भी सम्मान पाने के लिये कितनी आपाधापी करता है? अच्छी तरह जानता है कि वह अभय हो नहीं सकता। पर अभय के लिये प्रयास जारी है। आखिर उसके सारे पुरूषार्थ एक दिन ध्वस्त हो जाते हैं।

उन्होंने कहा– एक पल उसे लगता है, सारी जिन्दगी झूठ के साथ, झूठ के लिये जीया....! मेरी सारी तैयारियां और आकांक्षाऐं बह गई। वह एक पल आता है जब उसे अहसास होता है कि सारी व्यवस्थाऐं और सारा आडम्बर बेकार था। आखिर मुझे यों ही जाना पड रहा है। अच्छा होता कि मैं उनके लिये नहीं जीता, जिन्हें छोडना पड रहा है... जो छूटा जा रहा है। अच्छा होता कि मैं उसके लिये जीता, जिसे छोडने का कोई उपाय ही नहीं है। ऐसा चिंतन होता तो निश्चित ही मैं अमर हो जाता.... अभय हो जाता... पूर्ण सुरक्षित हो जाता...।

आज संघ माला के अवसर पर लूणिया एवं दायमा परिवार को बधाई देते हुए कहा– श्री बाबुलालजी लूणिया एवं श्री रायचंदजी दायमा परिवार ने चातुर्मास का सफल आयोजन करके अनूठा लाभ लिया है। एक हजार से अधिक आराधकों का चातुर्मास करवाकर तप, जप, त्याग, वैराग्य का अद्‌भुत वातावरण निर्मित किया है।

चातुर्मास प्रेरिका पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ने लूणिया एवं दायमा परिवार को इस सफल चातुर्मास कराने हेतु बधाई दी।

आयोजक श्री बाबुलालजी लूणिया ने क्षमायाचना की। व्यवस्था में किसी भी प्रकार की कोई गलती हुई हो तो उसके लिये मैं हृदय से मिच्छामि दुक्कडम् देता हूँ।

आयोजक श्री रायचंदजी दायमा ने कहा– यह चातुर्मास आनंद पूर्वक संपन्न हुआ है, यह पूज्य गुरुदेवश्री की कृपा का ही परिणाम है।

इस अवसर पर परिवार की ओर से संघमाला धारण करवाई गई। फिर आराधक संघ, श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट, खरतरगच्छ ट्रस्ट अहमदाबाद, कुशल वाटिका बाडमेर, जहाज मंदिर मांडवला, जिनदत्त कुशल सूरि खरतरगच्छ पेढी, कुशल वाटिका शाहीबाग अहमदाबाद, खरतरगच्छ संघ बैंगलोर, जैन श्री संघ पीपलोन आदि विभिन्न संघों व संस्थाओं द्वारा अभिनंदन किया गया।

प्रेषक
दिलीप दायमा